International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भगत सिंह : स्मृति में प्रेरणा, विचारों में दिशा

डॉ० हरमनदीप सिंह
शोधार्थी इतिहास
गुहला–चीका, जिला कैथल, हरियाणा
Email – harmanghuman05300@gmail.com

आज हम भारतीय और वि"व इतिहास के जिस अभूतपूर्व कठिन दौर से गुजर रहे हैं, जब प्रगति की शक्तियों पर प्रतिक्रिया की शक्तियां हावी पड़ती दिखाई दे रही हैं। पूँजीवाद और साम्राज्यवाद की आक्रामकता बढ़ती दिखाई दे रही है। प्रतिरोध की शक्तियाँ बिखरी हुई हैं और आवाम का बड़ा हिस्सा निरा"ाा का f"kकार है तो ऐसे समय में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के महान् नायक शहीदे–आज़म भगत सिंह के विचारों को आज बार–बार पढ़ने की जरूरत है, इन्हें हर जीवित हृदय तक पहुँचाने की जरूरत है। भगत सिंह का अप्रियतम शौर्य हमें अन्याय के विरूद्ध अंतिम सांस तक मुकाबला करने की प्रेरणा देता है। स्वतंत्रता का पुष्प शहीदों के रक्त से पुष्पित होता है, परंतु वह हिंसा तर्क रहित अथवा विचार रहित नहीं होती। उसके पीछे एक द"kन होता है, सोचा–समझा कार्यक्रम होता है और यह चिंतन हर युवा की धड़कनों तक पहुँचाने की जरूरत है। आज वि"ोषकर नई युवा पीढ़ी को भगत सिंह के विचारों से परिचित करवाने की जरूरत है, जिसे जन–जन तक पहुंचने से रोकने की कोf"k"k दे"k के सत्ताधारियों ने की है। दे"k के अधिकां"k युवा यह नहीं जानते कि 23 वर्ष की छोटी सी उम्र में फांसी का फंदा चूमने वाला जांबाज नौजवान कितना औजस्वी, प्रखर और दूरद"khं विचारक था।[1]

भगत सिंह और उनके साथियों के विचारों को भुला देने या दृष्टिओझल कर देने की साजि"k के विरूद्ध हमें संघर्ष करना होगा। शहीदे आजम भगत सिंह ने अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को अपने अंतिम पत्र (3 मार्च 1931) में यह पंक्तियां लिखी थी –

"दहर से क्यों खफा रहें, चर्ख का क्यों गिला करें,

सारा जहाँ अदू सही, आओ मुकाबला करें।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यह ललकार कि आओ मुकाबला करें, यह आह्वान आज भी उतना ही आव”यक है, जितना कि उस समय था। हमारे चारों ओर अराजकता, अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार का जो मकड़जाल फैला हुआ है, जो गतिरोध की स्थिति है, समाज के एक बड़े भाग की जो दयनीय दुरावस्था है, नौजवानों में जो बेचैनी एवं जड़ता गहरी जड़ें पकड़ रही है, इंसानियत की रूह ही जैसे सो रही है, उसे जगाने के लिए भगत सिंह के विचारों को और भी अच्छी तरह से जानने की आव”यकता है। आज उदारीकरण एवं निजीकरण के कारण आज़ादी का जो स्वरूप हमारे सामने आया है, जो आर्थिक नीतियां सामने आ रही हैं, वे नि”चत रूप से थोड़े से लोगों के लाभ के लिए हैं। अधिकां”ा जनता उस सुख स्वप्न से वंचित है जिसका सपना भगत सिंह ने देखा था। आज संभवतः उनके विचारों के अध्ययन की आव”यता है और एक बार पुनः नई क्रांति की जरूरत है। क्रांति का अर्थ यहां बम फेंकना या हत्या करना नहीं है। क्रांति का अर्थ सोच–समझकर न्यायोचित समता के सिद्धांत की स्थापना करना है। भगत सिंह ने क्रांति के अध्याय को स्पष्ट करते हुए कहा कि, ”एक ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना से है जो इस प्रकार के संकटों से दूर होगी और जिसमें सर्वहरा वर्ग का अधिपत्य सर्वमान्य होगा। क्रांति मानव जाति का जन्मजात अधिकार है जिसका अपहरण नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। श्रमिक वर्ग ही समाज का वास्तविक पोषक है, जनता की सर्वोपरि सत्ता की स्थापना श्रमिक वर्ग का अंतिम लक्ष्य है। इन आद”ाों के लिए और इस वि”वास के लिए हमें जो भी दंड़ दिया जाएगा, हम उसका सहर्ष स्वागत करेंगे। क्रांति की इस पूजावेदी पर हम अपना यौवन नैवेघ रूप में लाए हैं, क्योंकि ऐसे महान् आद”ा के लिए बड़े से बड़ा त्याग भी कम है। हम संतुष्ट हैं और क्रांति के आगमन की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं – इंकलाब जिंदाबाद।“[2]

सामान्यतः यह माना जाता है कि कुछ सेठों, पूंजीपतियों, भूमिपतियों, पुलिस अफसरों की हत्या करना और मतदाता के द्वारा सरकार के परिवर्तन का सिलसिला ही क्रांति है। लेकिन भगत सिंह के अनुसार यह क्रांति का वास्तविक आ”ाय नहीं है। वे लिखते हैं – क्रांति का अर्थ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनिवार्य रूप से स”ास्त्र आंदोलन नहीं होता। बम और पिस्तोल कभी–कभी क्रांति को सफल बनाने के साधन मात्र हो सकते हैं। इसमें भी संदेह नहीं है कि कुछ आंदोलनों में बम और पिस्तौल एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं। परंतु केवल इसी कारण से बम और पिस्तौल क्रांति के पर्यायवाची नहीं हो जाते। विद्रोह को क्रांति नहीं कहा जा सकता, यद्यपि यह हो सकता है कि विद्रोह का अंतिम परिणाम क्रांति हो। उन्होंने अपना मत भी स्पष्ट किया – पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की शान पर तेज होती है।[3]

वास्तविक क्रांति के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं – क्रांति के लिए न तो भावनाओं में बहने की जरूरत है और न ही मौत की। इसके लिए दरकार है अनवरत संघर्ष, पीड़ा तथा कुर्बानियां भरे जीवन की। सबसे पहले अपने 'मैं पन' को खत्म करो। व्यक्तिगत सुख–सुविधाओं के सपने को छोड़ दो। इसके बाद काम शुरू करो। आपको इंच–दर–इंच बढ़ना होगा। इसके लिए साहस, दृढ़ता और दृढ़ इच्छा”ाक्ति चाहिए। कोई मु”िकल, कोई बाधा आपको हतोत्साहित न कर पाए। कोई असफलता और वि”वासघात आपको हता”ा न कर पाए। आप पर ढ़ाया गया जुल्म आपकी क्रांतिकारी लग्न को खत्म न कर पाए। तकलीफों और कुर्बानियों की पीड़ा के बीच आप विजयी निकलें और अलग–अलग जीतें, क्रांति की मूल्यवान सम्पत्ति बनें।[4]

भगत सिंह जनसाधारण को भारतीय क्रांतिकारियों के उद्दे”य एवं कार्यों से अवगत कराना चाहते थे। क्रांति के प्रचार एवं क्रांति की फिलॉसफी के प्रसार को असेम्बली में बम फेंककर सार्थक करना ही उनका मुख्य उद्दे”य था। यदि उन्हें किसी को मारना ही होता तो बहुत से लोगों को वह मार सकते थे, परन्तु उससे बम की फिलॉसफी समाप्त हो जाती। वह तो जनमानस के समक्ष मानवीय न्यायालयों के माध्यम से क्रांतिकारी उद्दे”यों का प्रचार एवं प्रसार करना चाहते थे।[5] वास्तव में क्रांति एक ऐसे समाज की स्थापना करती है जिसमे किसी प्रकार का भय न हो, जो सर्वहारा वर्ग, किसान, मजदूर, गरीब की जरूरत समझता हो, जहां एक वर्ग

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दूसरे वर्ग को लूटने की लालसा न रखता हो। जो मानवता को समझते हों, वही पीड़ित मानवता को पूँजीपतियों तथा अन्य कले”ाों से छुटकारा दिला सकते हैं। क्रांति कोई भी एक व्यक्ति नहीं कर सकता। वह पूरे समाज की उन्नति से सम्बन्धित होती है, वह प्राणिमात्र को आदर से देखती है। आज हमें जो स्वतंत्रता मिली है, उसने जो रूप अख्तियार किया है, दे”ाी पूँजीवाद ने जो रूप धारण किया है, उसमें तो सूरज–चाँद दोनों को ग्रहण लग गया है। न दिन का प्रका”ा है न रात की चाँदनी। सत्ता एक पूँजीवाद के हाथ से निकलकर दूसरे पूँजीपति के पास चली गई है। भगत सिंह आजादी को समूची जनता का मालिकाना हक समझते थे। आज का नौजवान अपनी जिस व्यर्थता से ग्रस्त हो रहा है, जिस मायूसी और अवसाद से युवा वर्ग ग्रस्त है, उनके लिए भगत सिंह के विचार ऐतिहासिक मोड़ देने वाले हैं।[6]

भगत सिंह की दूरद”ाी निगाहों ने गंभीर चिंतन में भारत के भविष्य को बहुत अच्छी तरह समझ लिया था। उन्होंने कहा था कि दे”ा को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना है। उसकी तैयारी अभी से आरंभ करनी चाहिए। हमें अपने भावी कार्यक्रम का आरम्भ इस वाक्य से करना चाहिए कि हमारे दे”ा में "क्रांति जनता के हित में जनता के हित के लिए हो और जनता के द्वारा हो।" जनता को जगाने के लिए एक नि”चत योजना होनी चाहिए। उस पर समझदारी के साथ दृढ़तापूर्वक अमल भी होना चाहिए। आने वाला समय सिर्फ मालिकों की तबदीली नहीं होना चाहिए, वरन् उसका अर्थ होगा नई व्यवस्था का जन्म। यह एक दिन का काम नहीं है। इसमें कई द”ाकों का परिश्रम करना होगा। कितना बलिदान करना होगा। बलिदान और क्रांति, विचार एवं कर्म, एक नियम है जबकि सफलता एक संयोग है। उसे प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयत्न”ाील होना होगा।[7]

भगत सिंह का मानना था कि क्रांतिकारी आजादी हासिल करने का मतलब 90 फीसदी आम मेहनतक”ा जनता के लिए आज़ादी हासिल करना है। वे साम्राज्यवाद और सामन्तवाद का ना”ा करने के साथ ही दे”ाी पूंजीवाद का खात्मा भी करना चाहते थे, उनकी पूरी पूँजी और कारखाने जब्त करके मेहनतक”ाों के हाथों में सौंप देना चाहते थे। वे भूमि पर समूची जनता

का सांझा मालिकाना हक कायम करना चाहते थे और एक ऐसा जनतंत्र बहाल करना चाहते थे जो 90 फीसदी जनता का जनतंत्र हो। स्पष्ट शब्दों में भगत सिंह ने समाजवाद की स्थापना की, सर्वहारा वर्ग के अधिनाकत्व की स्थापना को अपना लक्ष्य समझते थे। वे राष्ट्रवादी क्रांतिकारी मात्र न होकर उत्कट अन्तराष्ट्रीयतावादी थे। भाषाई–जातिगत–धार्मिक संकीर्णता से वे पूरी तरह से मुक्त थे तथा रहस्यवाद और भाग्यवाद की दिमागी गुलामी से छुटकारा पा चुके थे। भगत सिंह की नास्तिकता एक सच्चे वैज्ञानिक भौतिकवादी की नास्तिकता थी।[8]

इस तरह हम देखते हैं कि भगत सिंह के विचार, उनका चिंतन आज प्रत्येक क्षेत्र में उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था, चाहे वह धर्म हो, साम्प्रदायिकता हो या क्रांति ही क्यों न हो। कहने का अर्थ यह है कि नौजवानों के लिए उनके दि”ाा निर्दे”ा के प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने अपने विचार दिए हैं। हम देखते हैं कि उनके वक्तव्य में स्पष्ट चिंतन है। परिस्थितियों एवं समस्याओं को उन्होंने गंभीरतापूर्वक सोचा–समझा है। उनका दृष्टिकोण हिंसात्मक नहीं था। क्रांतिकारियों को वह सिरफिरा, आवे”ा में आकर काम करने वाला नहीं समझते थे। गुलाम और बेबसी से कराहती जनता को कुचलना आसान है किंतु विचार अमर होते हैं, वि”व की कोई भी ताकत उसे दबा नहीं सकती। वि”व में बड़े से बड़े साम्राज्य नष्ट हो गए किंतु जनसाधारण ने जिन विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने समाप्त किया वे आज भी जीवित हैं। हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम मानव रक्त बहाने की अपनी विव”ाता से दुखी हैं, परन्तु क्रांति के द्वारा सभी को समान स्वतंत्रता देने तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रांति के अवसर पर कुछ न कुछ रक्तपात आव”यक है। भगत सिंह निरंतर प्रगति के पक्ष में थे। रूढ़िवादी शक्तियां मानव समाज को कुमार्ग पर ले जाती हैं। ये परिस्थितियां मानव समाज की उन्नति में गतिरोध का कारण बन जाती हैं। क्रांति की भावना से मानव जाति की आत्मा स्थाई तौर पर ओत–प्रोत होनी चाहिए। आव”यकता है पुरानी व्यवस्था सदैव बदलती रहे तथा नई व्यवस्था के लिए स्थान खाली करती रहे। जिससे यह आद”ा व्यवस्था संसार को बिगड़ने से रोक सके।[9]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इस पूरी चर्चा का उद्दे”य भगत सिंह के चिंतन के उन पक्षों को रेखांकित करना है जो आज के समय में भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं। उनके विचार शा”वत तथा अमर हैं। उन्होंने लिखा है कि क्रांतिकारी अपने मानवीय प्यार के गुणों के कारण मानवता के पुजारी हैं। हम शा”वत एवं वास्तविक शांति चाहते हैं। जिसका आधार न्याय एवं समानता है। कहना नहीं होगा कि ये विचार जितने उच्च और उपयोगी हैं, उतने ही चिरयुगीन हैं। सदैव अमर रहने वाले हैं। स्वयं भगत सिंह ने अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को जो अंतिम पत्र लिखा था, उसकी दो पक्तियाँ आज भी सार्थक व प्रेरक हैं।

"हवा में रहेगी मेरे ख्याल की बिजली,
ये मु”ते खाक है फानि, रहे न रहे।"[10]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 12 December- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

1. एम०एम० जुनेजा तथा रघुबीर सिंह, भगत सिंह पर दुर्लभ लेख, माड़र्न पब्लि”ार्ज, पंचकुला, 2012, पृष्ठ 139
2. हंसराज रहबर, भगत सिंह एवं ज्वलंत इतिहास, भगत सिंह विचार मंच, दिल्ली, 1996, पृष्ठ 191
3. विरेन्द्र सिंधु, युगदृष्टा भगत सिंह और उनके मृत्युंजय पुरखे, भारतीय ज्ञानपीठ प्रका”ान, वाराणसी, 1969, पृष्ठ 51
4. ि”ाव वर्मा, शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां, ने”ानल बुक सेंटर, नई दिल्ली, पृष्ठ 200
5. विरेन्द्र सिंधु, अमर शहीद भगत सिंह, प्रका”ान विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1974, पृष्ठ 57–58
6. मन्मथनाथ गुप्त, भारत में स”ास्त्र क्रांति–चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास, नागरी प्रेस, प्रयाग, 1939, पृष्ठ 70
7. चमनलाल, 'क्रांतिवीर भगत सिंह : अभ्युदय और भविष्य', लोक भारती प्रका”ान, इलाहाबाद, 2012, पृष्ठ 98
8. चयनिका उनियाल पंडा, क्रांतिकारी भगत सिंह – व्यक्तित्व, विचारधारा और प्रासंगिकता, स्वराज प्रका”ान, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 143
9. डॉ० सुधीर भसीन, शहीदे आजम भगत सिंह, गैलेक्सी पब्लि”ार्ज़, दिल्ली, 2011, पृष्ठ 242
10. एम०एम० जुनेजा तथा रघुबीर सिंह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 140–141